## डर्क

18 वीं शताब्दी के मोड़ पर डर्क वैन होगेंडॉर्प एक उन्मूलनवादी थे: उन्होंने दासता का विरोध किया। क्या डर्क ने जिस आज़ादी के बारे में लिखा था, क्या वही आज़ादी थी जिसके लिए गुलाम लोग लड़ रहे थे?
डर्क सुरबाया में रहते थे जहां उन्होंने डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC) के लिए काम किया। वहां वे 153 लोगों के 'स्वामि' थे। फ्रांसीसी क्रांति के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने घोषणा की कि एक आदर्श समाज में गुलामी के लिए कोई जगह नहीं है, और यह कि बीस साल के समय में व्यवस्था को समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने बटाविया में एक क्रूर इंडो-यूरोपीय महिला दासधारक के बारे में अपने पिता के उपन्यास *क्रास्पोएकोल* के नाट्यरूपांतरण के साथ बड़े दर्शकों तक पहुंचने की कोशिश की। हालाँकि, उनके विचारों को बहुत कम समर्थन मिला। बीस साल बाद डर्क ने ब्राजील में एक कॉफी और संतरे का बागान नोवो सायन शुरू किया। उनकी रोकड़ बही दिखाती है कि जब उन्होंने मुफ्त कर्मचारियों को नियुक्त किया, तब भी उन्होंने लोगों को खरीदा। उन्होंने शिकायत की कि उनके पास और कोई विकल्प नहीं था क्योंकि स्वतंत्र लोग हमेशा उनसे 'दूर' भागते थे। डर्क को मुक्त लोगों से बिना शर्त वफादारी और सेवा की उम्मीद थी।

रंगमंच अनुकूलन *क्रास्पोएकोल* ,
डर्क वैन होगेंडॉर्प, 1800।

नोवो सायन में डर्क वैन होगेंडॉर्प, c. 1820.

डर्क वैन होगेंडोर्पो का पोर्ट्रेट
क्रिस्टोफ सुहर, 1813।

डर्क वैन होगेंडॉर्प के नोवो सायन बागान से 1822 की कैशबुक में तीन लोगों को 'मेरे दास' के रूप में दर्ज किया गया है, जिसमें कोई नाम नहीं दिया गया है।